इमाम का महीना

बोलीं जिनदाँ में ज़ैनब यह रोकर - क़ैद में हो गया एक महीना
हम सभों की ख़बर लो बरादर - क़ैद में हो गया एक महीना

पास अपने बुला लीजे भाई - उठ नहीं सकती मुझसे जुदाई
सब्र कब तक करेगी यह ख़्वाहर - क़ैद मे हो गया एक महीना

अहले क़रिया ने मय्यत उठायी - दशते ग़ुरवत में तुरबत बनाई
हम तो अब तक हैं लाचारों मुज़तर - क़ैद में हो गया एक महीना

धूप दिन भर की और ओस शब की - गैर हालत है जिन्दा में सबकी
पहुचें क्योंकिर तुम्हारी लहद पर - क़ैद में हो गया एक महीना

है सकीना की भी गैर हालत - देखी जाती नहीं उसकी सूरत
कुढ़ती है आपकी प्यारी दुख़तर - क़ैद में हो गया एक महीना

शिमर ने बेख़ता दुर्रे मारे - और कानों से गौहर उतारे
बच्ची रोती है अब तक बिलखकर - क़ैद में हो गया एक महीना

जिनसे फिर जाए सारा ज़माना - 'फ़िक्र' उनका कहाँ पर ठिकाना
क्यों न हो जुल्म उन बेकसों पर - क़ैद में हो गया एक महीना